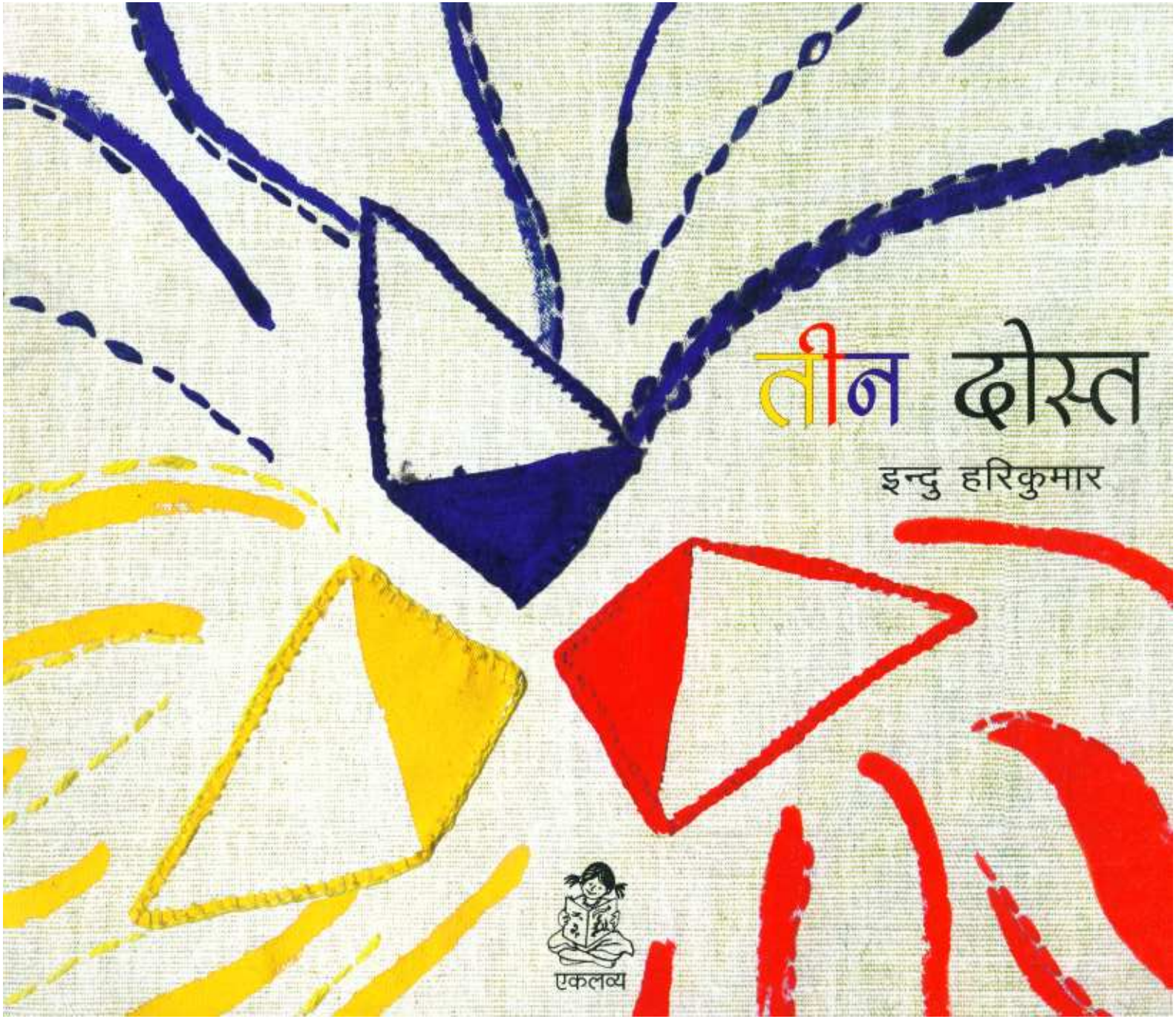
तीन दोस्त
इन्दु हरिकुमार
एकलव्य

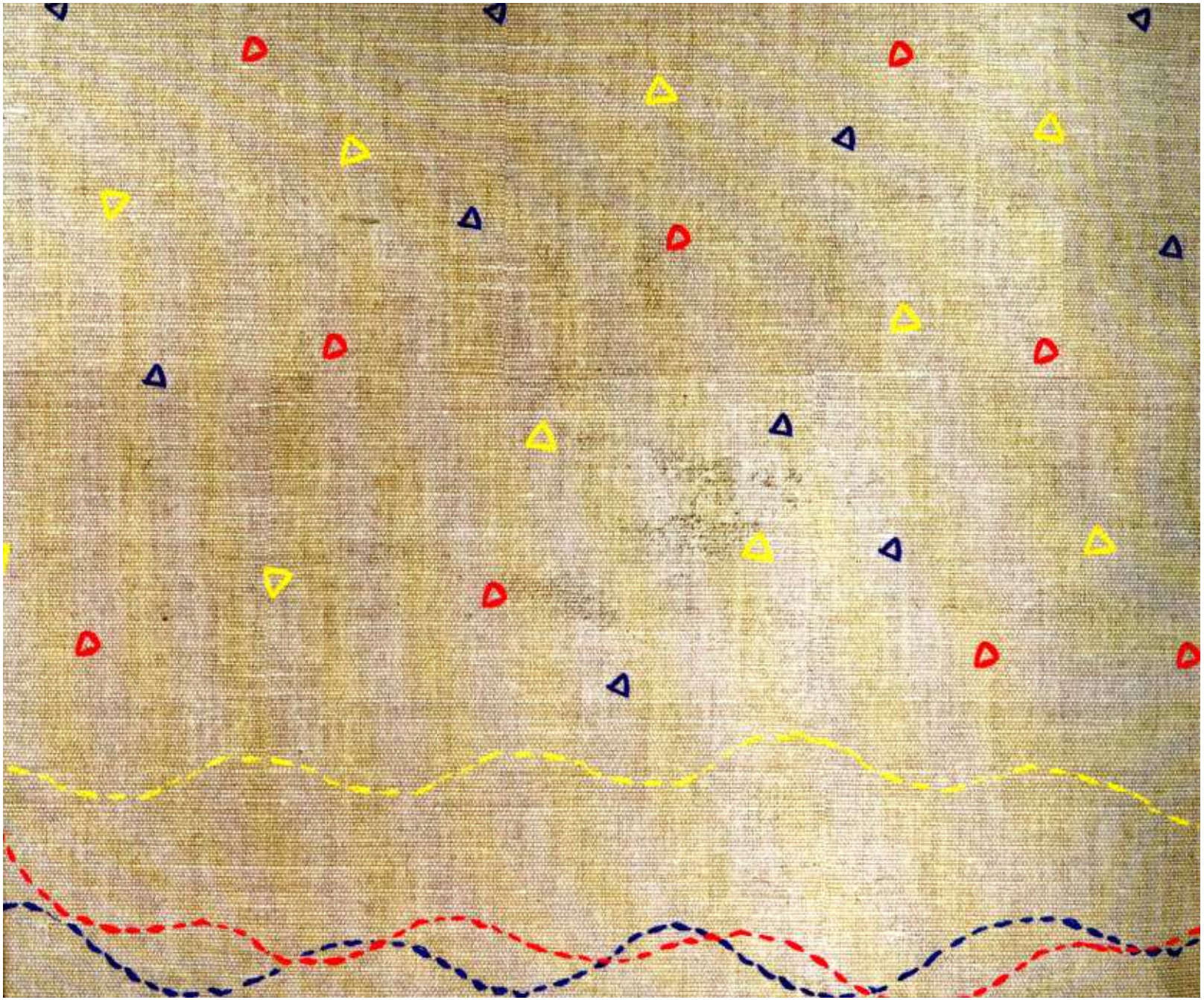

तीन दोस्त

चित्र व कहानी
इन्दु हरिकुमार

एकलव्य का प्रकाशन

तीन दोस्त

कहानी व चित्र: इन्दु हरिकुमार
अँग्रेज़ी से अनुवाद: दुलदुल बिस्वास

© इन्दु हरिकुमार व एकलव्य
इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मुफ्त वितरण हेतु इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य के ज़रिए लेखक से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2013 / 5000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-81300-67-1
मूल्य: ₹ 35.00

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट व नवजभाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है (ISBN: 978-93-81300-65-7 / मूल्य: ₹ 45.00)।

प्रकाशक:
एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोन: (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

बात पुरानी है।
तब बस
तीन ही रंग थे।
लाल, पीला और नीला!

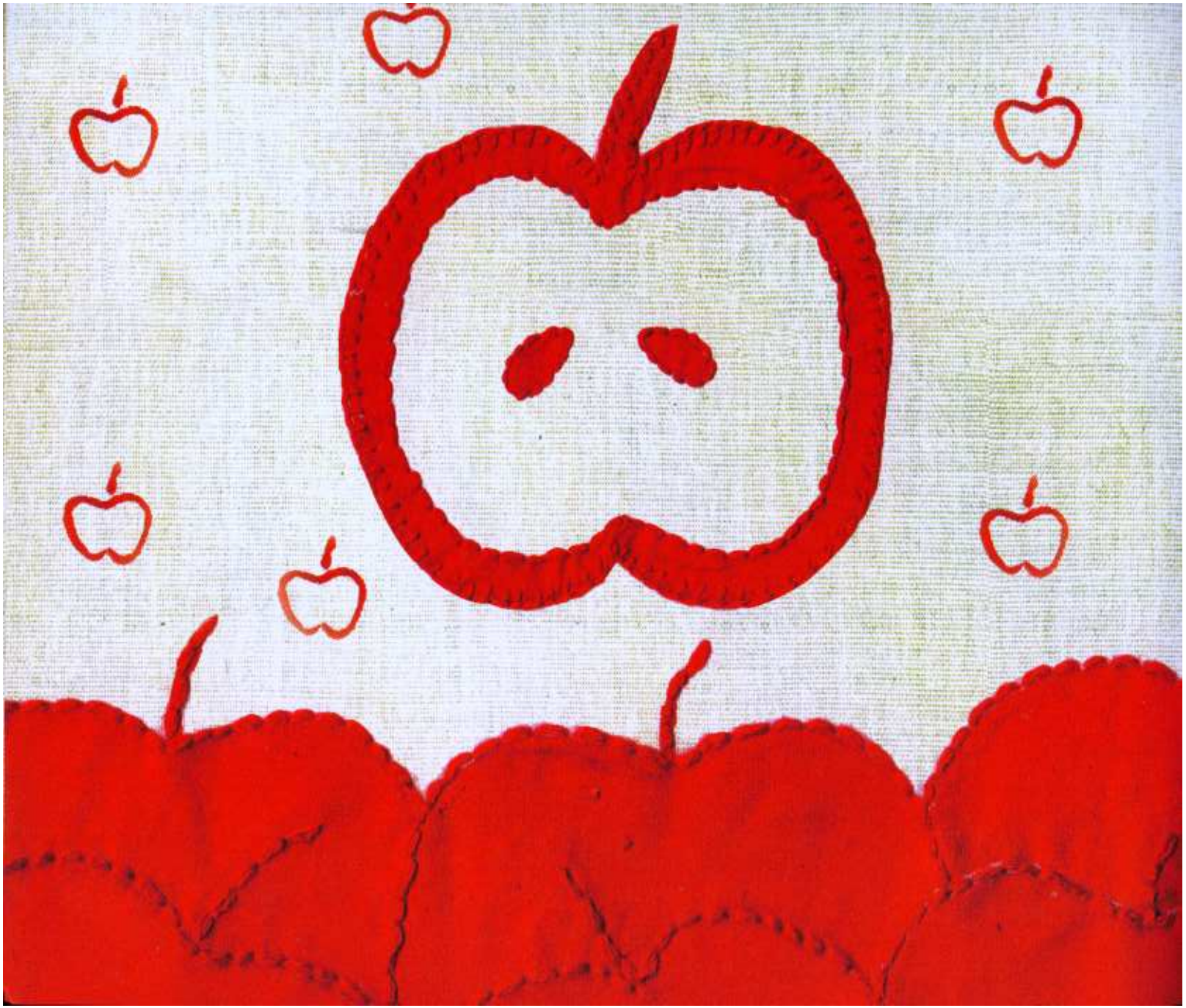

लाल रहता था हर लज़ीज़ चीज़ में,
जैसे टमाटर, सेब, चेरी और आलूबुखारे

पीले ने बनाया था सूरज को चमकदार
जो मुस्कुराकर देता था रोशनी लगातार

आसमान भी नीला था और समुन्दर भी।

पेड़ों से टपकती बारिश भी नीली ही थी।

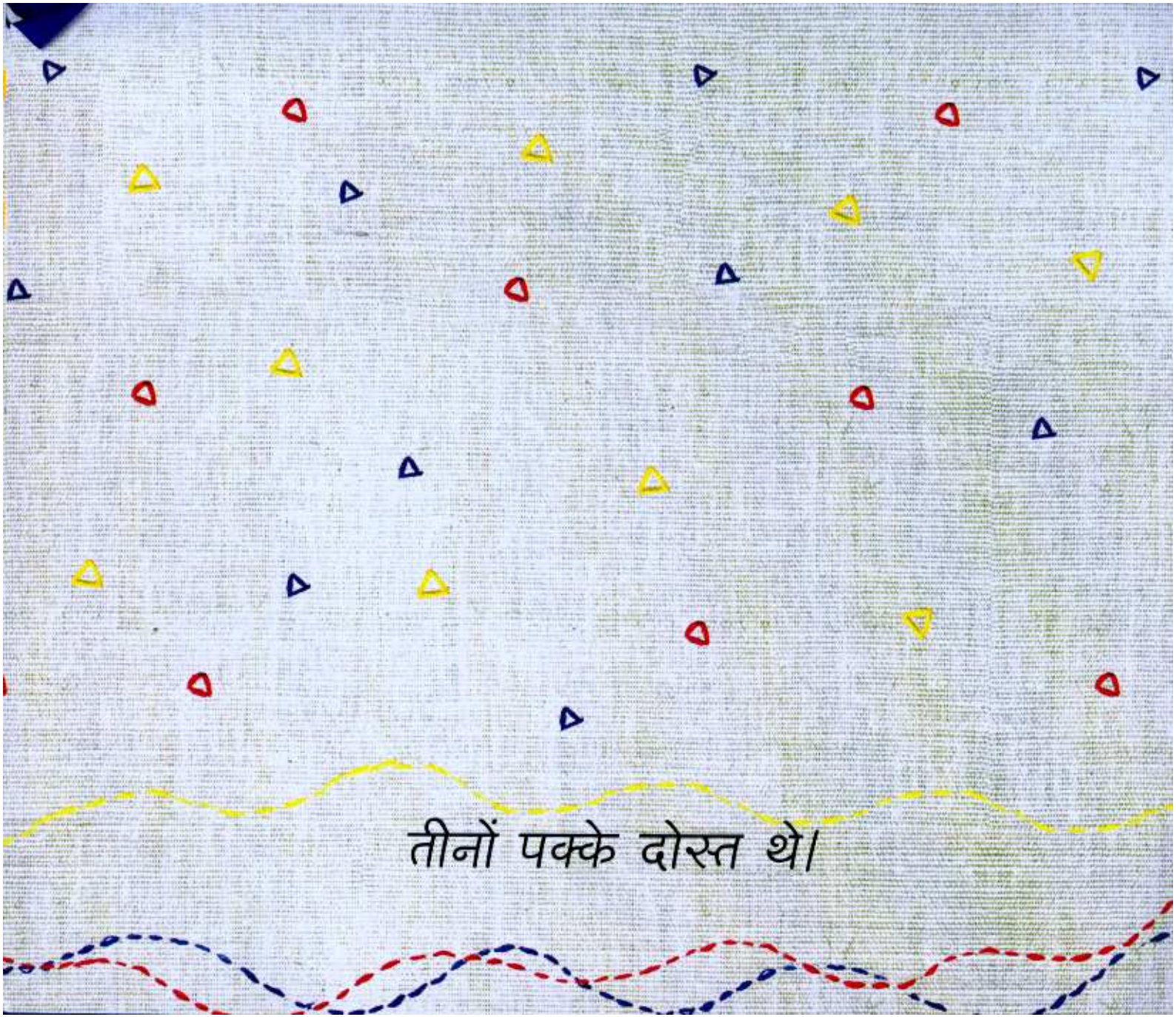
तीनों पक्के दोस्त थे।

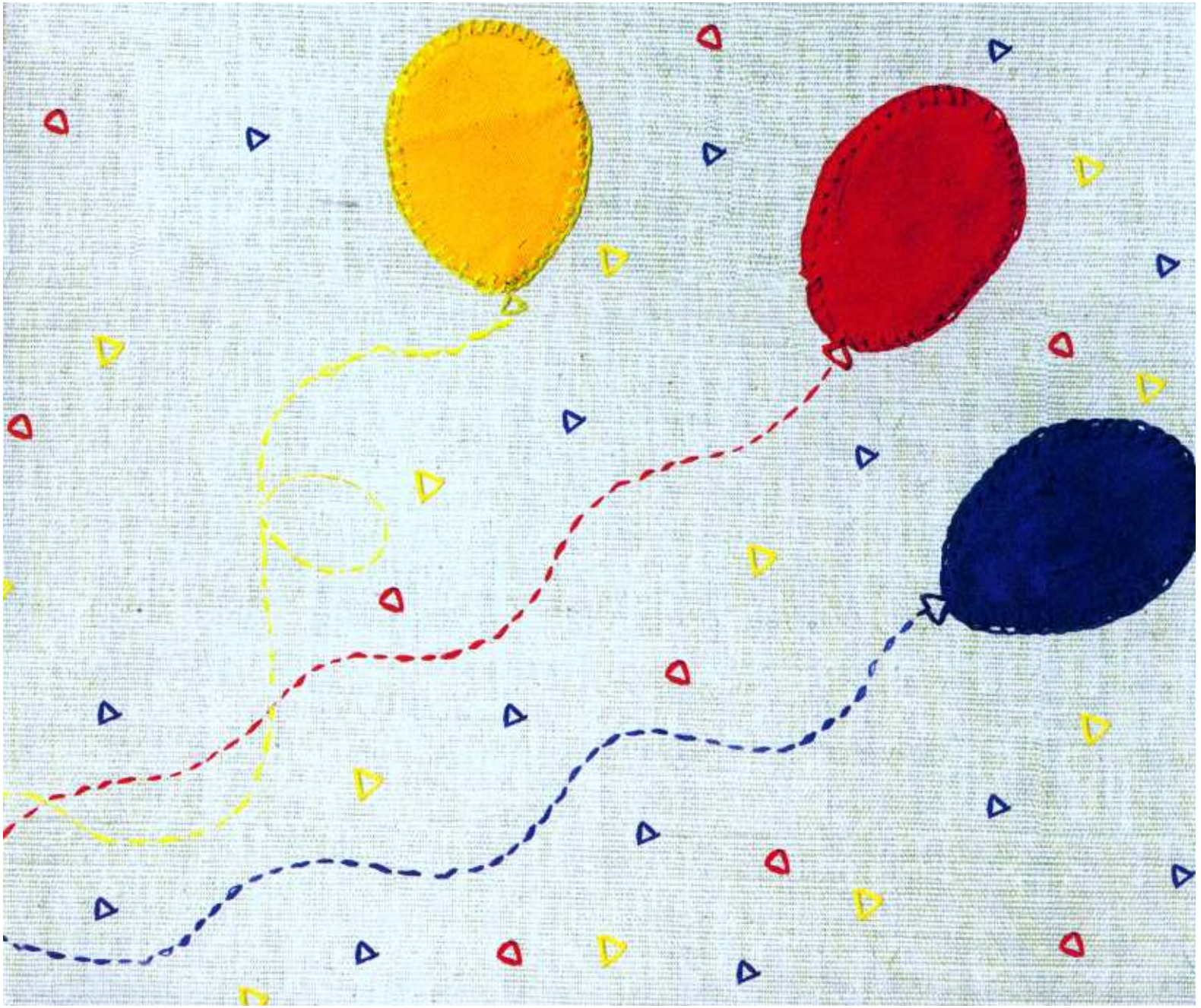

एक दिन उन्होंने कहा, "हमें और दोस्त चाहिए।
चलो नए दोस्त बनाएँ।"

और वे निकल पड़े दोस्तों की तलाश में।

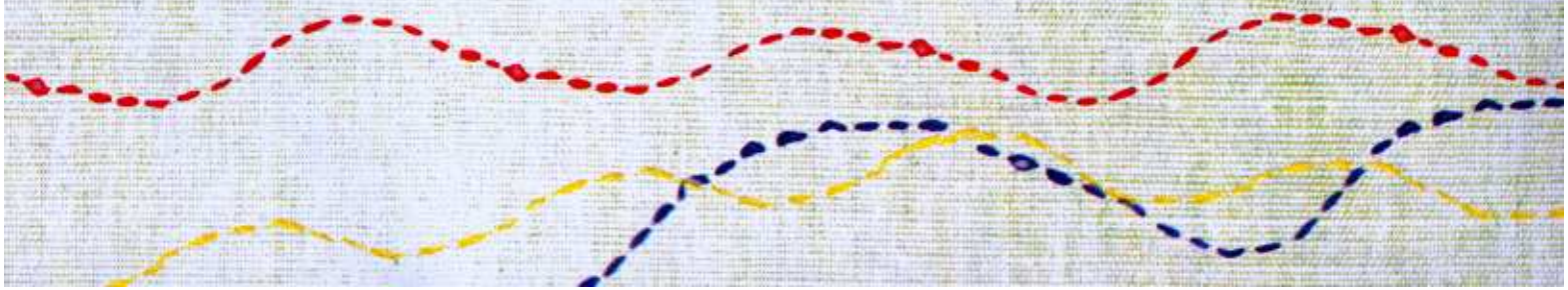

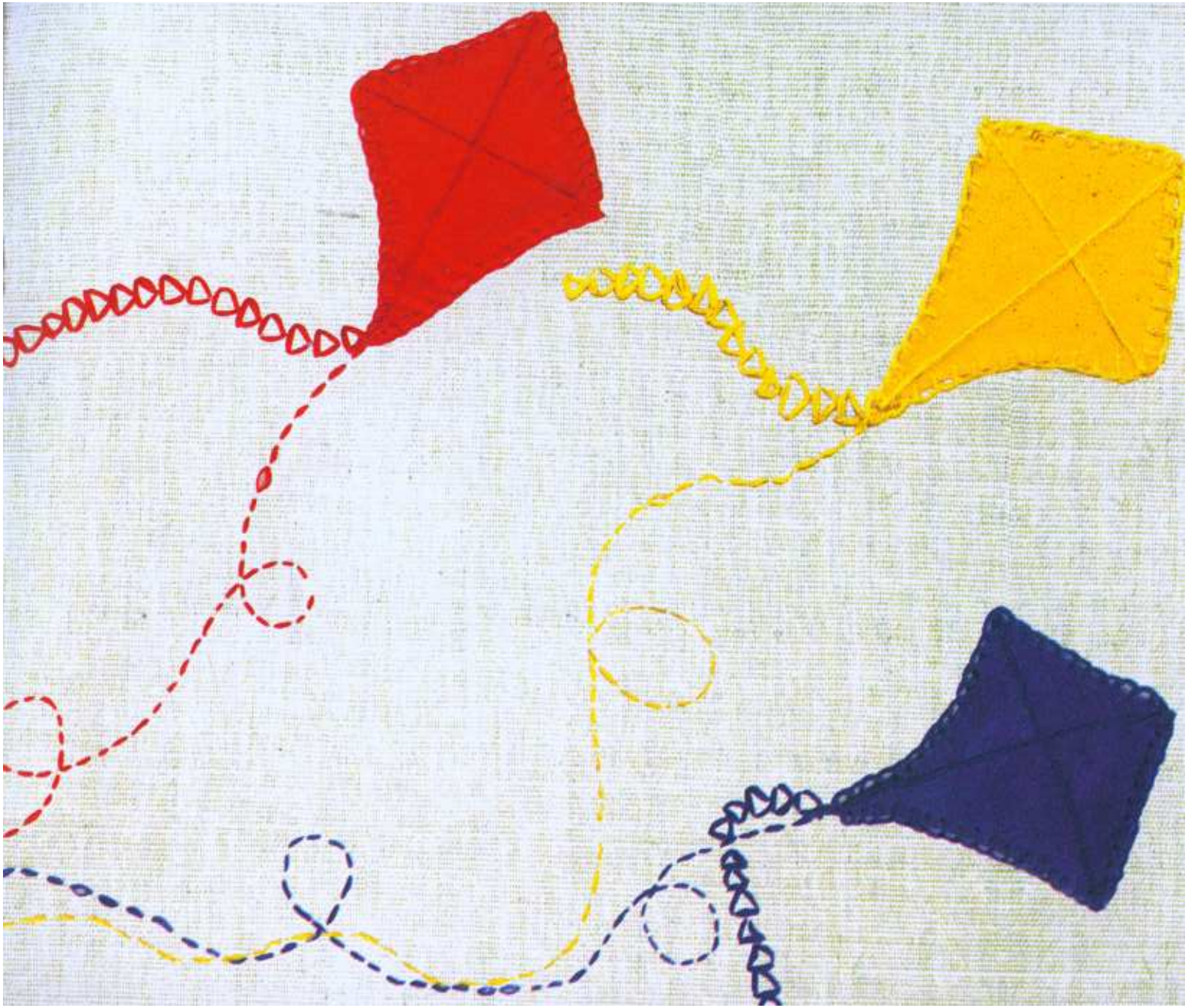

और देखो

क्या हुआ!

लाल और पीला साथ चले तो एक
नया दोस्त मिला - नारंगी।

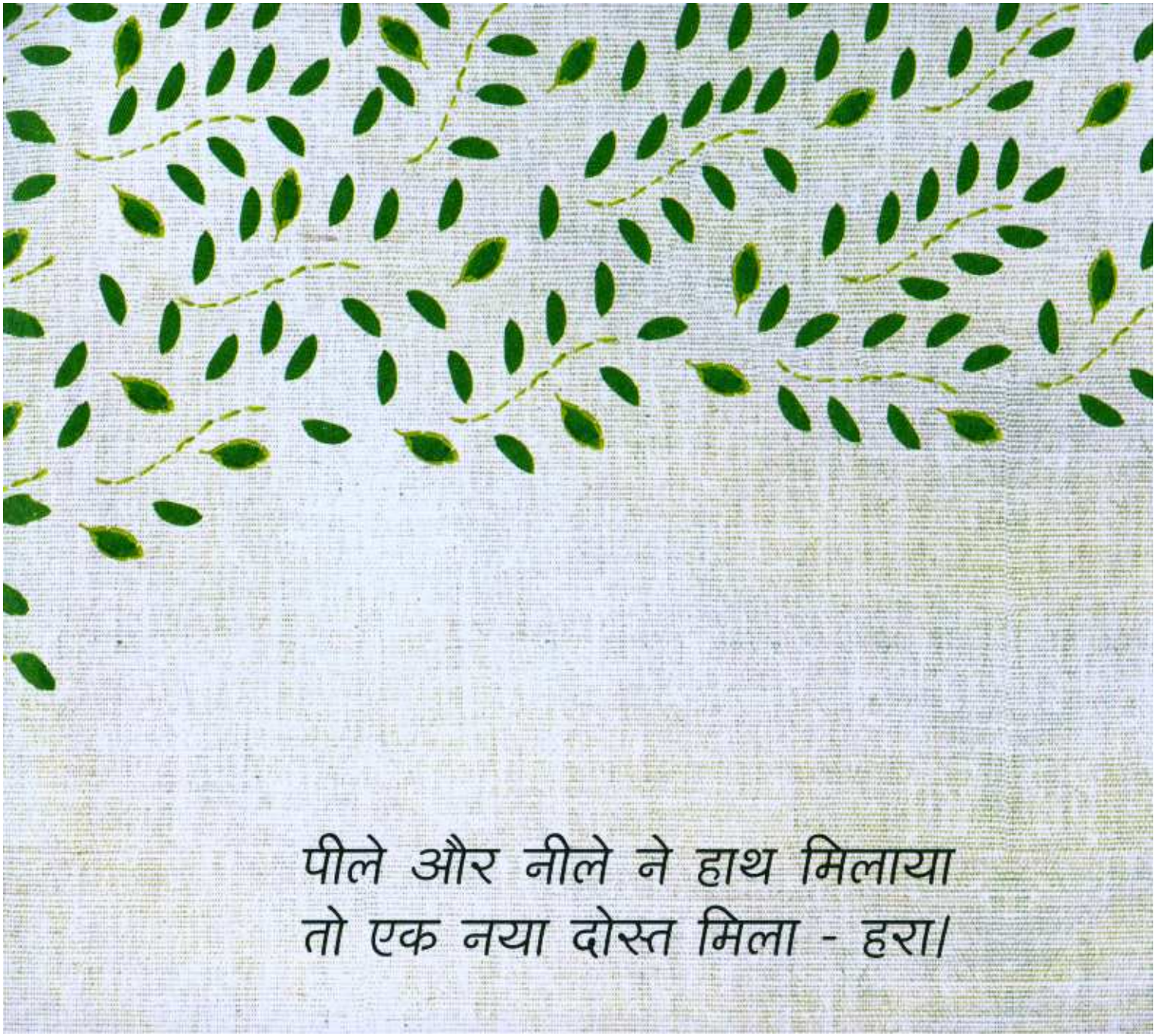
पीले और नीले ने हाथ मिलाया
तो एक नया दोस्त मिला - हरा।

लाल और नीले के पास आते ही
एक नया दोस्त मिला - बैंगनी।

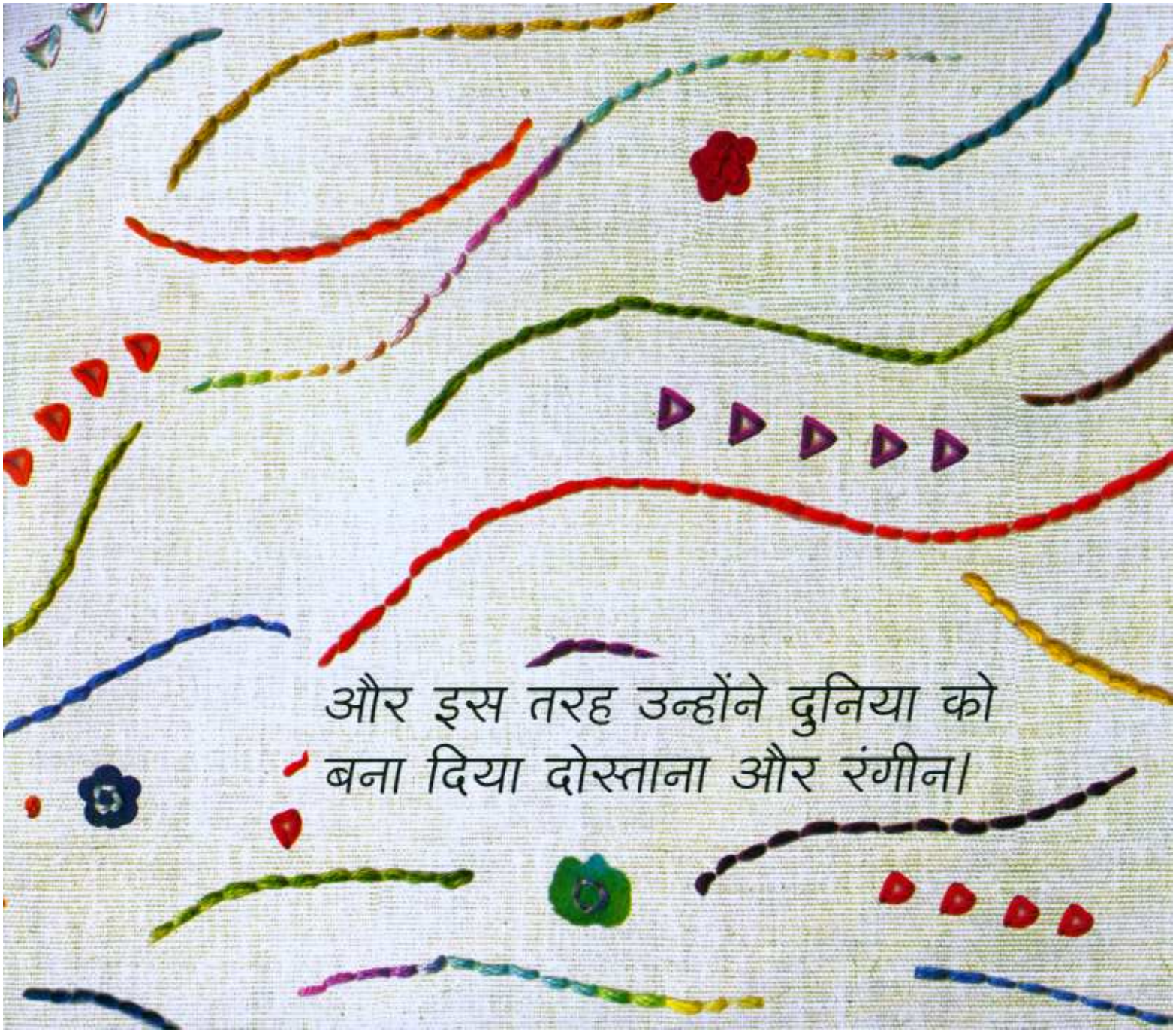
और इस तरह उन्होंने दुनिया को
बना दिया दोस्ताना और रंगीन।

इन्दु हरिकुमार ने फैशन और इतिहास की पढ़ाई की है। वे इत्तिफाक से चित्रकथाओं की दुनिया में आ गई हैं।

इन्दु नियमित ब्लॉग लिखती हैं और उन्होंने सरकारी, गैर-सरकारी व अन्तर्राष्ट्रीय, सभी तरह के प्रकाशकों के लिए लेखन व चित्रांकन का काम किया है। कबाड़ सामान पर काम करके उसे सुन्दर बनाने में उन्हें मज़ा आता है। वे खुद को फेब्रिक-फिएंड कहती हैं - यानी कपड़ा-जुनूनी!

यह किताब कपड़े पर फेब्रिक पेंट व कशीदाकारी से बनाई गई है।

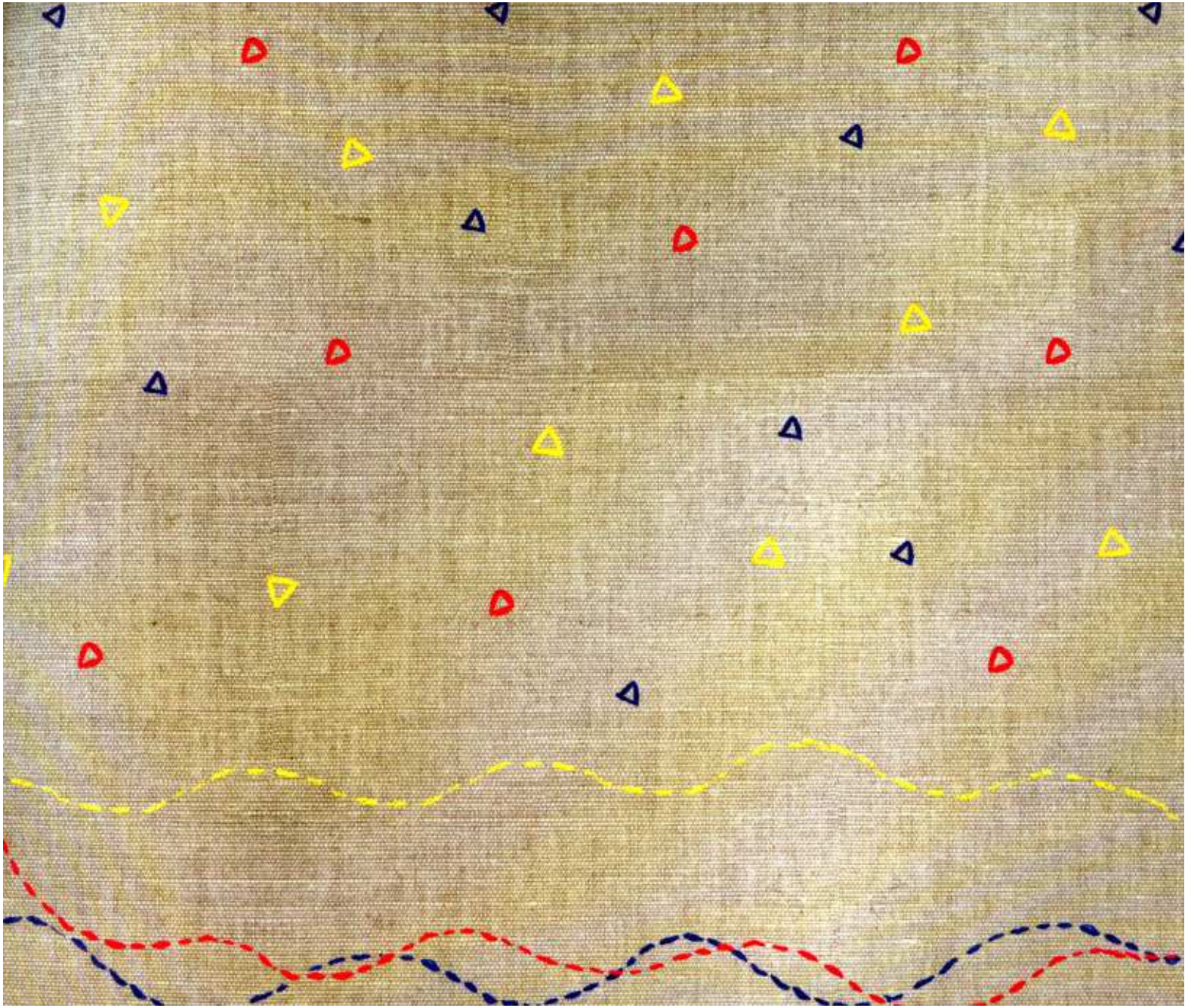

लाल, पीला और नीला नए दोस्तों की
तलाश में निकले हैं।
क्या मिलता है उन्हें? तुम भी चलो
उनके साथ इस रंगीन सफर पर।

मूल्य: ₹ 35.00

A1221H

ISBN: 978-93-81300-67-1

9 789381 300671

एकलव्य

SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित